काव्य के भेद

अथ काव्यभेदमाह-

काव्यं ध्वनिर्गुणीभूतव्यङ्ग्यं चेति द्विधा मतम्। तत्र-

वाच्यातिशयिनि व्यङ्ग्ये ध्वनिस्तत्काव्यमुत्तम् ॥ १ ॥

काव्य के दो भेद होते हैं- ध्वनि और गुणीभूत व्यंग्य। जब ध्वनि शब्द में अधिकरण का अर्थ देने वाला प्रत्यय माना जाता है (ध्वन्यतेऽस्मिन्निति ध्वनि:)तब यह उत्तम काव्य का वाचक होता है और जब करणप्रधान माना जाय (ध्वन्यतेऽनयेति ध्वनि:) तब व्यंजनाशक्ति का बोधक होता है एवं भावप्रधान मानने पर 'ध्वननं ध्वनि:' रसादि की प्रतीति का कर्मप्रधान 'ध्वन्यते इति ध्वनि:' रसादि व्यंग्य का वाचक होता है।

वाच्यादधिकचमत्कारिणि व्यङ्ग्यार्थे ध्वन्यतेऽस्मिन्निति व्युत्पत्त्या ध्वनिर्नामोत्तमं काव्यम्।

जिस काव्य में व्यंग्य-अर्थ वाच्य-अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कार उत्पन्न करता हो उसे 'ध्वनि' कहते हैं। वह उत्तम काव्य कहा जाता है। यहाँ पर 'ध्वनि' पद अधिकरण प्रधान है।

भेदौ ध्वनेरपि द्वावुदीरितौ लक्षणाभिधामूलौ।

अविवक्षितवाच्योऽन्यो विवक्षितान्यपरवाच्यश्च ।। २ ॥

तत्राविवक्षितवाच्यो नाम लक्षणामूलो ध्वनिः। लक्षणामूलत्वादेवात्र वाच्यमविवक्षितं बाधितस्वरूपम्। विवक्षितान्यपरवाच्यस्त्वमिधामूलः। अत एवात्र वाच्यं विवक्षितम्। अन्यपरं व्यङ्ग्यनिष्ठम्। अत्र हि वाच्योऽर्थः स्वरूपं प्रकाशयन्नेव व्यङ्ग्यार्थस्य प्रकाशकः। यथाप्रदीपो घटस्य। अमिधामूलस्य बहुविषयतया पश्चान्निर्देशः।

लक्षणामूलक ध्वनि और अभिधामूलक ध्वनि – ये ध्वनि के दो भेद हैं। लक्षणामूलक ध्वनि को 'अविवक्षित वाच्य' कहते हैं क्योंकि इसमें वाच्य अर्थ बाधित रहता है। अभिधामूलक ध्वनि को 'विवक्षितान्यपरवाच्य' कहते हैं क्योंकि इसमें वाच्य अर्थ विवक्षित होता है। विवक्षित होने पर भी यहाँ अभिधेय अर्थ 'अन्यपरक' अर्थात् व्यंग्य अर्थ को प्रधानतया द्योतन करने में संलग्न रहता है। जैसे दीप स्वयं को प्रकाशित करते हुए घट को भी प्रकाशित करता है। अभिधामूलक ध्वनि का विषय विशद् है अतः उसका उल्लेख बाद में किया गया है। लक्षणामूलक ध्वनि का विषय संक्षिप्त है अतः सूचीकटाहन्याय से इसकी चर्चा शास्त्रकार ने पहले की है।

अविवक्षितवाच्यस्य भेदावाह-

अविवक्षितवाच्यध्वनि (लक्षणामूलक ध्वनि) के भेदों पर शास्त्रकार ने प्रकाश डालते हुए कहा है कि इसके भी दो भेद होते हैं।